Dr. Kumari Kiran
Department of Home Science
Al-Hafeez College, Ara.
B.A Part III VIII Paper (Family Relationship).

Topic — Marital adjustment and causes of adjustment in married life
वैवाहिक अनुकूलन (सामंजस्य) और असामंजस्य उत्पन्न होने वाले कारण

पति-पत्नी वैवाहिक रूपी रथ के दो पहिए हैं। दोनो का समान रूप से नियंत्रण रहना आवश्यक है। पति-पत्नी के संबंधों में समानता एवं मधुरता का होना आवश्यक है; क्योंकि इसके बिना विवाह के उद्देश्य को सफलता पूर्वक नहीं किया जा सकता है। वैवाहिक जीवन में परस्पर प्रेम, सहयोग एवं त्याग की भावना होनी चाहिए। तभी वैवाहिक जीवन सुखमय हो पाता है। वैवाहिक समायोजन का अर्थ है पति-पत्नी का प्रेमपूर्ण संबंध बनाकर जीवन यापन करना। सुखी और आनंदमय जीवन व्यतीत करने के लिए वैवाहिक समायोजन आवश्यक हो जाता है तथा यह तभी संभव होता है जब प्रेमपूर्ण वातावरण परिवार, पति-पत्नी के बीच रहता है एवं आपसी समस्याओं का निबटारा परस्पर सहयोग के आधार पर हो।

जब पति-पत्नी सहनशीलता, त्याग सहयोग तथा प्रेम आदि गुणों के आधार पर अपना जीवन सुखमय बनाते हैं। तब इसे ही वैवाहिक अनुकूलन या समायोजन कहते है।

जब पति-पत्नी किसी कारणवश चिन्ताग्रस्त एवं दुःखी रहते है तो उनके मध्य वैवाहिक असामंजस्य की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। पारिवारिक कलह उत्पन्न हो जाता है। वैवाहिक सामंजस्य नहीं होने के निम्नलिखित कारण है:—

Scanned with CamScanner

(i) संवेगों के असामंजस्य

विवाहित जीवन को सुखमय बनाने के लिए पति - पत्नी के विभिन्न संवेगों में सामंजस्य होना आवश्यक है। प्रत्येक मनुष्य में कुछ जन्मजात संवेग होते हैं जो भाव से संबंध रखते हैं। भाव सुख एवं दुख दो प्रकार का होता है। पति - पत्नी को चाहिए कि वे लोग एक - दूसरे के सुख - दुख को समझे तथा उनके अनुरूप अपने आप को बनावें। जो पति - पत्नी अपने संवेगों में उचित रूप से नियंत्रित और व्यवस्थित नहीं कर पाते उनका वैवाहिक जीवन असफल रहता है।

(2.) यौन संबंध की अव्यवस्था

आहार, निद्रा, भय एवं मैथुन जीव मात्र की प्रवृत्तियाँ हैं। इन मूल प्रवृत्तियों में मैथुन बहुत ही शक्तिशाली है जिस पर विजय प्राप्त करना असंभव कहा जाता है। तीव्रतम रूप से बलवती हो जाने पर मनुष्य विवेक खो बैठता है। इसलिए इसकी तृप्ति के लिए विवाह किया जाता है। अगर वैवाहिक जीवन में पति - पत्नी की लैंगिक व्यवस्था उचित रीति से नहीं होती है तो वैवाहिक जीवन दु:खमय हो जाता है। वैवाहिक जीवन में असंतोष का बड़ा कारण यौन संबंध की अव्यवस्था को माना जाता है।

(3.) सामाजिक एवं सांस्कृतिक असामंजस्य

विवाह द्वारा दो विभिन्न संस्कृतियों का मिलन होता है। पति और पत्नी दो विभिन्न परिवार के होते हैं और अपने परिवार की संस्कृति की श्रद्धा करते हैं। विवाह के बाद, एक दूसरे को थोड़ा बदलना पड़ता है। ताकि वे नए वातावरण में समायोजन कर सकें। लड़कियाँ नए वातावरण को शीघ्र ग्रहण कर लेती हैं पर पुरुष अपने रीति - रिवाजों, आचरणों तथा संस्कारों से पूर्व जकड़ा रहना चाहता है। वह धार्मिक विश्वासों एवं आचरणों को छोड़ना नहीं चाहता। अत: आवश्यक है कि पति - पत्नी दोनों एक - दूसरे की भावनाओं को समझें ताकि वैवाहिक जीवन सुखी रहे।

Scanned with CamScanner

(4) आर्थिक कष्ट —

विवाहित जीवन मे घर की आर्थिक दशा भी अपना एक महत्व रखती है। पुरुष की आर्थिक दशा ठीक नही रहने से पत्नी कलह प्रिय हो जाती है जिससे घर की शांति भंग होती है परिवार की भौतिक एवं मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति नही होने से कलह-क्लेश हुआ करते है

(5) परस्पर वास्तविक प्रेम का न होना —

आधुनिक युवक युवतियों के सौन्दर्य पर रीझते है और प्रेम की महत्ता नही समझते। यहाँ तक कि अपनी पत्नियों के प्रति उनके मन मे प्रेम के स्थान पर केवल वासना ही रहती है जो सौन्दर्य की प्यास के तृप्त होते ही स्वतः समाप्त हो जाती है। इस प्रकार विवाह के बाद दो-तीन वर्षो मे ही प्रेम के अभाव मे वासना की नींव पर निर्मित विवाह रुपी महल नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। और लड़के अन्य किसी सुंदर लड़की की तलाश मे रहने लगते है

(6) वैवाहिक जीवन मे संबंधियो का हस्तक्षेप —

प्रायः देखा जाता है कि निकट संबंधियो द्वारा पारिवारिक जीवन मे हस्तक्षेप होने लगता है जिससे वैवाहिक समायोजन भंग हो जाता है। प्रायः देखा जाता है कि शादी के पूर्व लड़का माता-पिता की आज्ञा से कार्य करता है, परंतु शादी के बाद अगर वह कार्य पत्नी के सलाह से करता है तो माता-पिता रुष्ट हो जाते है। स्त्रियाँ प्रायः जाने-अनजाने मे एक दूसरे के अप रुप गुण के प्रति ईर्ष्या की भावना रखती है इसलिए समायोजन की समस्या गंभीर हो जाती है। जिस परिवार मे घर के प्रत्येक काम मे औरतो का हस्तक्षेप होता है वहाँ वधू के लिए समायोजन एक समस्या होती है

(7) शिक्षा का अभाव —

शिक्षा के अभाव मे वैवाहिक जीवन असफल रहता है अशिक्षित पति पत्नी शिक्षा के अभाव मे घर की व्यवस्था सुचारु रुप से नही कर पाते है कभी-कभी शिक्षित पति और अशिक्षित पत्नी के कारण भी समायोजन नही हो पाता है

वैवाहिक समायोजन के आवश्यक तत्व :-

वैवाहिक जीवन में समायोजन की अधिक आवश्यकता पड़ती है। इसके लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए -

(i) संवेगों में सामंजस्य -
मानव जीवन में संवेगों का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः वैवाहिक जीवन को सुखी बनाने के लिए पति-पत्नी दोनों का संवेगों में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए पति एवं पत्नी दोनों को एक-दूसरे के लिए समर्पित की भावना रखना चाहिए।

(ii) परस्पर प्रेम, सहयोग तथा विश्वास -
विवाहित जीवन को सुखमय बनाने के लिए पति-पत्नी के परस्पर प्रेम आत्मत्याग, पवित्रता आदि का होना आवश्यक है। एक-दूसरे पर विश्वास करते हुए जीवन यापन करना चाहिए। क्रोध एवं शंका को कम स्थान देना चाहिए।

(iii) उपयुक्त जीवन साथी का चुनाव -
माता-पिता को अपने पुत्र-पुत्रियों के स्वभाव, प्रवृत्तियों, रुचियों तथा आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए उनके हेतु उपयुक्त जीवन साथी का चुनाव करना चाहिए ताकि विवाह के बाद मन-मुटाव एवं उपेक्षा पैदा न हो। शादी के पूर्व जीवन के प्रत्येक पहलू पर विचार करना चाहिए।

(iv) यौन संवेगों की सुव्यवस्था -
अगर पति-पत्नी के अपनों में कोई यौन-विकार हो तो उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। यौनिक व्यवस्था के विषय में युवक-युवतियों को ज्ञान कराना चाहिए।

(v) उत्तरदायित्व का पालन -
पति-पत्नी को अपनी पारिवारिक व्यवस्थाओं के अनुकूल दायित्वों को निष्ठा के साथ वहन करना चाहिए।

(vi) घर की आर्थिक स्थिति को ठीक रखने के लिए घर की आय-व्यय तालिका बनानी चाहिए।

Scanned with CamScanner

आय, व्यय का ब्योरा बनाते समय दोनो में पारस्परिक विचार-विमर्श, विश्वास होना चाहिए। घर की व्यवस्था का कार्य भार सम्मति से बाँटना चाहिए।

(VII) पति-पत्नी दोनो को एक-दूसरे की भावनाओं को भली-भाँति समझना चाहिए और भावनाओं की कद्र करनी चाहिए ताकि वैवाहिक जीवन सुखमय रहे। नववधू को नये वातावरण में निराशा न मिले इस ओर ध्यान रखना चाहिए।

(VIII) वासना को जीवन में कम से कम स्थान देना चाहिए। वासना के स्थान पर प्रेम रखना चाहिए।

(IX) पति-पत्नी को शिक्षित होना परम आवश्यक है।

(X) पति-पत्नी को एक-दूसरे के रिश्तेदारों की आलोचना नहीं करनी चाहिए।

(XI) पति-पत्नी को एक-दूसरे के चरित्र पर आक्षेप नहीं करना चाहिए।

(XII) पति-पत्नी को परस्पर एक-दूसरे के योग्य सिद्ध होने के लिए बराबर प्रयत्न करना चाहिए।

(XIII) पति-पत्नी को कभी-कभी एक-दूसरे की प्रशंसा करनी चाहिए।

(XIV) परिवार में उत्पन्न समस्याओं को आपस में मिलकर सुलझाना चाहिए।

(XV) सुखी, शांत पारिवारिक जीवन के लिए यह आवश्यक है कि वर-वधू को दोनो अपनी मान्यताओं में अंतर लाएँ, आपसी मतभेद को दूर कर समझौते से परिवार में शांति स्थापित करें। पति-पत्नी के बीच अधिकार की भावना न रहकर समानता की भावना होनी चाहिए।